अध्याय

01

पद

सूरदास

© not to be republished

© JCERT not to be republished

सूरदास जीवन -परिचय

- जन्म (सन्1478) मथुरा के निकट 'रुनकता' नामक गाँव (कुछ विद्वान् दिल्ली के निकट सीही नामक गाँव को मानते हैं।
- सूरदास अंधे थे, लेकिन उनके द्वारा गाए जाने वाले सवा लाख पद बताये जाते हैं। वे श्रीकृष्ण के परम भक्त थे।
- भक्ति -कालीन सगुण भक्ति काव्य धारा के कृष्ण भक्ति शाखा के कवि ।
- महाप्रभु वल्लभाचार्य के शिष्य।
- निधन सन् 1583 ई. में पारसौली (गोवर्धन के निकट) में।

साहित्यिक परिचय

- प्रसिद्ध ग्रंथ -सूरसागर, साहित्य लहरी एवं सूर सारावली।
- लोक -प्रचलित ब्रजभाषा।
- कवि सूरदास की संपूर्ण पद गेय मुक्तक है।
- काव्य में वात्सल्य, और श्रृंगार रस की प्रचूरता।
- काव्य में उपमा,रूपक,उत्प्रेक्षा आदि अलंकार अनायास प्रयुक्त हुआ है।
- काव्य में उपमा,रूपक,उत्प्रेक्षा आदि अलंकार अनायास प्रयुक्त हुआ है।
- सूरदास वात्सल्य रस के सम्राट माने जाते हैं।

पाठ -परिचय

- 'भ्रमरगीत' भौंरे को लक्ष्य कर गाया जाने वाला गीत।
- गोपियों का श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम का चित्रण।
- उद्धव द्वारा गोपियों के लिए योग का संदेश लाना।
- गोपियों को योग की बातें नीरस लगना।
- एक भौंरे का उड़ता हुआ आना।
- गोपियों द्वारा उद्धव पर व्यंग्य किया जाना।
- गोपियों द्वारा उद्धव को श्री कृष्ण के प्रेम से अछूता बताया जाना।
- गोपियों द्वारा योग को उन लोगों के लिए उपयुक्त बताया जाना,जिनका मन चंचल हो।

© JCERT not to be republished

सूरदास

द्वारा रचित इन पदों में गोपियों की कृष्ण के प्रति एकनिष्ठ प्रेम, भक्ति, और स्नेहमयता प्रकट हुई है। जिस पर किसी अन्य का प्रभाव नहीं रह जाता है। गोपियों पर श्रीकृष्ण के प्रेम का ऐसा रंग चढ़ा है कि खुद कृष्ण का भेजा योग -संदेश कड़वी ककड़ी और रोग -व्याधि के समान लगता है। उन्होंने इन पदों के माध्यम से निर्गुण पर सगुण का विजय दिखाने का सफल प्रयास किया है।

भक्तिकाल
- निर्गुण भक्ति धारा
- सगुण भक्ति धारा
  - राम भक्ति शाखा
  - कृष्ण भक्ति शाखा

1. शब्दार्थ –

ऊधौ–	**उद्धव।**
अति–	बहुत।
बड़भागी –	भाग्यवान।
अपरस –	अछूता।
नाहिन–	नहीं।
अनुरागी–	प्रेम से भरा हुआ।

पद

(1) काव्यांश

ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।
प्रीति-नदी मैं पाउँ न बोरयौ, दृष्टि न रूप परागी।
'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी।।

प्रसंग-प्रस्तुत पद हमारी पाठ्य पुस्तक 'क्षितिज भाग-2' में संकलित सूरदास विरचित 'भ्रमरगीत' के पद से लिया गया है।इसमें गोपियों द्वारा उद्धव पर व्यंग्य किया गया है कि कैसे वह प्रेमरस में नहीं पग पाने के कारण बड़भागी अर्थात् भाग्यहीन है। (बडभागी शब्द व्यंग्यार्थ में प्रयुक्त)

व्याख्या – गोपियाँ उद्धव पर व्यंग्य करती हुई कहती हैं कि हे उद्धव! तुम भाग्यवान हो जो कि श्रीकृष्ण के साथ रहकर भी उनके प्रेम से अछूते हो।अर्थात् उनकी प्रेम की धागे से नहीं बंध पाए हो। गोपियाँ उद्धव की तुलना कमल के पत्तों व तेल के गागर से करते हुए कहती हैं कि जिस तरह कमल के पत्ते जल में ही रहते हैं लेकिन जल से अछूते रहते हैं एवं जिस प्रकार तेल से भरी हुई मटकी पानी के मध्य में रहने पर भी उसमें रखा हुआ तेल पानी के प्रभाव से मुक्त रहता है। उसी प्रकार श्री कृष्ण के साथ रहते हुए भी तुम्हारे ऊपर उनके प्रेम- तत्व का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।आगे वे कहतीं हैं कि तुमने प्रेम रूपी नदी में कभी पाँव नहीं दिया और न ही तुम्हारे दृष्टि श्रीकृष्ण के रूप-सौंदर्य पर मुग्ध हुई है। हम लोग तो भोली-भाली बेचारी स्त्री हैं। हम लोग श्री कृष्ण के प्रेम में ठीक उसी तरह पग गई हैं जिस तरह गुड़ के प्रेम में चींटी।अर्थात् चीटियाँ जिस तरह गुड़ के प्रेम के कारण गुड में चिपक जाती हैं उसी तरह हम श्रीकृष्ण के प्रेम में लिपट गई है।

विशेष

- भाषा-लोकव्यवहार की व्रजभाषा
- शैली-गीति-शैली में लिखा गया है।
- रस अलंकार आदि -'ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि' एवं 'गुर चाँटी ज्यौं पागी'में उपमा अलंकार का सुन्दर प्रयोग किया है।

© JCERT not to be republished

पद

(2) काव्यांश

मन की मन ही माँझ रही।
कहिए जाइ कौन पै ऊधौ, नाहीं परत कही।
अवधि अधार आस आवन की, तन- मन बिथा सही।
अब इन जोग सँदेसनि सुनि -सुनि, बिरहिनि बिरह दही।
चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तैं, उत तैं धार बही।
'सूरदास' अब धीर धरहिं क्यौं, मरजादा न लही।।

प्रसंग--प्रस्तुत पद हमारी पाठ्य पुस्तक 'क्षितिज भाग-2' में संकलित सूरदास विरचित 'भ्रमरगीत' के पद से लिया गया है। पद में सूरदास जी द्वारा श्रीकृष्ण के वियोग में गोपियों की विरह-वेदना की चरमावस्था का चित्रण किया गया है।

व्याख्या – गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि हमारी मन की बातें मन ही में ही रह गई। हमें यह समझ में नहीं आ रहा है कि हम अपनी मन की बातें किनसे करें।श्रीकृष्ण के आने की आशा ही एकमात्र जीने की आधार थी।इसीलिए तन-मन से उनके विरह को सहती रहीं। अब आपके योग का संदेश सुन -सुनकर हम विरहिणी विरह में जल चुकी हैं।हमें जिधर से प्रेम की पुकार आने की आशा थी, उधर से योग की धारा प्रवाहित हो रही है। सूरदास जी गोपियों के माध्यम से कहते हैं कि अब जब श्रीकृष्ण ने ही सभी मर्यादाओं का त्याग कर दिया है तो भला हम कैसे धैर्य धारण कर सकती हैं।

विशेष

- भाषा- लोकव्यवहार की व्रजभाषा।
- शैली - गीति-शैली में लिखा गया है।
- रस, अलंकार आदि-वियोग श्रृंगार रस का सुन्दर प्रयोग। तन -मन एवं सुनि -सुनि में पुनरुक्ति, बिरहिनि बिरह दही एवं अवधि अधार आस आवन, पंक्ति में अनुप्रास अलंकार का सुन्दर प्रयोग किया है।

© JCERT not to be republished

पद

(3) काव्यांश

हमारैं हरि हारिल की लकरी।
मन क्रम बचन नंद-नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।
जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जक री।
सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी।
सु तौ ब्याधि हमकौं लै आए, देखी सुनी न करी।
यह तौ 'सूर' तिनहिं लै सौंपौ, जिनके मन चकरी।

प्रसंग-प्रस्तुत पद हमारी पाठ्य पुस्तक' क्षितिज भाग-2' में संकलित सूरदास विरचित 'भ्रमरगीत' के पद से लिया गया है। पद में सूरदास द्वारा गोपियों के माध्यम से प्रेम को सरस एवं योग को इतना नीरस बताया गया है कि गोपियाँ भोग की तुलना कड़वी ककड़ी तक से कर बैठती हैं।

व्याख्या – गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि हमारे कृष्ण हमें उसी तरह प्यारा है जिस तरह हारिल पक्षी को अपनी लकड़ी प्यारी होती है। जिस तरह हारिल पक्षी अपने पैर में लकड़ी को चिपकाए रखती है उसी तरह हम अपने मन,वचन एवं कर्म में श्रीकृष्ण की छवि को बसाए हुए हैं। दिन-रात,जागते-सोते यहाँ तक स्वप्न में भी श्रीकृष्ण के नाम की रट करते रहती हैं।हे उद्धव! हमें योग का संदेश सुनते ही ऐसा प्रतीत होता है जैसे किसी ने हमारे मुँह में कड़वी ककड़ी रख दी हो।योग रूपी जिस बीमारी को तुमने हमारे लिए लाया है।इसके संबंध में हमने न कभी देखा है,न कभी सुना हैऔर न ही कभी इसका व्यवहार किया है। योग का संदेश उनके लिए है, जिनका मन चंचल हो। हमारा मन तो श्रीकृष्ण के प्रेम में ही स्थिर हो गया है अर्थात् हमें योग की आवश्यकता नहीं है।

4. विशेष

- भाषा- लोकव्यवहार की व्रजभाषा।
- शैली - गीति-शैली में लिखा गया है।
- रस, अलंकार आदि- वियोग श्रृंगार रस। 'कान्ह-कान्ह' में पुनरुक्ति, 'हमारे हरि हारिल की लकरी' में अनुप्रास एवं रूपक अलंकार है।

© JCERT not to be republished

पद

(4) काव्यांश

हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।
समुझी बात कहत मधुकर के, समाचार सब पाए।
इक अति चतुर हुते पहिलैं ही, अब गुरु ग्रंथ पढ़ाए।
बढ़ी बुद्धि जानी जो उनकी, जोग-सँदेस पठाए।
ऊधौ भले लोग आगे के, पर हित डोलत धाए।
अब अपनै मन फेर पाइहैं, चलत जु हुते चुराए।
ते क्यौं अनीति करैं आपुन, जे और अनीति छुड़ाए।
राज धरम तौ यहै 'सूर', जो प्रजा न जाहिं सताए।

प्रसंग-प्रस्तुत पद हमारी पाठ्य पुस्तक' क्षितिज भाग-2' में संकलित सूरदास विरचित 'भ्रमरगीत' के पद से लिया गया है। पद में गोपियों का श्रीकृष्ण के प्रति निश्छल एवं निस्वार्थ प्रेम का चित्रण लोक-भाषा में किया गया है।

व्याख्या - गोपियाँ उद्धव को संबोधित करते हुए कहती हैं कि तुम्हारी बातों से ऐसा लगता है कि कृष्ण ने राजनीति शास्त्र पढ़ लिया है। एक तो वह पहले से चतुर थे। अब उन्होंने बड़े-बड़े ग्रंथ पढ़ लिए हैं,तभी तो इसी बुद्धिमानी के कारण योग का संदेश भेजें हैं। आगे गोपियाँ कहती है कि हे उद्धव!पहले के लोग बहुत अच्छे होते थे जो परोपकार के लिए दौड़ पड़ते थे। क्या श्री कृष्ण जोकि मथुरा जाते समय हमारे मन को चुरा लिए हैं वे हमारे मन को वापस करेंगे? हम तो उनको दूसरों की अन्याय छुड़ाने वाले के रूप में जानतीं थीं,लेकिन वह तो खुद ऐसा करके अन्याय कर रहा है। सूरदास जी के शब्दों में गोपियाँ कहती हैं कि राजधर्म तो यही है जो अपनी प्रजा को न सताए, लेकिन श्री कृष्ण हमें सताकर राजधर्म तोड़ रहा है।

विशेष

- भाषा- लोकव्यवहार की व्रजभाषा
- शैली -काव्य-रूप की दृष्टि से समस्त सूर-काव्य गीति-शैली में लिखा गया है।
- रस, अलंकार आदि-वियोग श्रृंगार रस,बढ़ी बुद्धि में अनुप्रास अलंकार है।

© JCERT not to be republished

पुरइनि पात -	कमल का पत्ता।	गुहारि -	रक्षा के लिए पुकारना।
दागी -	दाग /धब्बा।	जितहिं तैं -	जहाँ से।
ज्यौं -	जैसे।	उत तैं -	उधर से।
ताकौं -	उसको।	धार-	धारा।
प्रीति नदी -	प्रेम की नदी।	धीर-	धैर्य।
पाउँ-	पैर, बोरयौ-डुबोया।	धरहिं-	धारण करें।
परागी -	मुग्ध होना।	मरजादा-	मर्यादा।
अबला-	बेचारी नारी।	लही-	रही।
भोरी-	भोली।		
गुर-	गुड़।		
चाँटी-	चींटी।		
पागी-	पगी रहती है।		

2. शब्दार्थ -

माँझ-	**अन्दर में।**
कौन पै-	किसके पास
नाहीं परत कही-	कही नहीं जाती
अवधि-	समय।
अधार -	आधार।
आस-	आशा।
आवन-	आने की।
बिथा -	व्यथा /दुःख।
जोग संदेसनि-	योग के संदेशों को।
बिरहिनी -	वियोग में जीने वाली
बिरह दही—	विरह की आग में जल चुकी हैं।
हुतीं -	थी

3. शब्दार्थ -

हरि-	**श्रीकृष्ण**
हारिल-	एक तरह की पक्षी जो अपने पैरों में लकड़ी दबाये रखती है।
लकरी-	लकड़ी।
क्रम-	कार्य।
नंदनंदन-	नन्द का पुत्र अर्थात् श्रीकृष्ण।
दृढ़-	मजबूती से।
उर-	ह्रदय।
पकरी-	पकड़ी
दिवस -	निसि-दिन -रात
जक री -	रटती रहती है।
करुई -	कड़वी।
ककरी-	ककड़ी।
सु-	वह।

© JCERT not to be republished

ब्याधि-	रोग /बीमारी
तिनहि -	उनको।
चकरी -	चंचल रहता है।

4. शब्दार्थ -

पढ़ि-	**पढ़कर /सीखकर।**
मधुकर-	भौंरा,(गोपियों द्वारा उद्धव को इसी शब्द से संबोधित किया गया है)
इक-	एक।
गुरु-	बड़ा।

हुते-	थे।
पठाए-	भेजा।
आगे के-	पहले के।
परहित-	दूसरों की भलाई के लिए।
डोलत धाए-	घूमते-फिरते थे।
फेर-	फिर से।
पाइहैं-	पाएँगे।
आपुन-	अपनों के।
अनीति-	अन्याय।
जाहि-	जिसका।

सूरदास के पद पाठ का प्रश्नोत्तर

प्रश्न : 1. गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित है?

उत्तर :- गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में यह व्यंग्य निहित है कि वे इतने अभागे है कि प्रेम की दरिया में रहकर प्रेम के प्यासे है अर्थात् श्रीकृष्ण के साथ रहकर भी उनके प्रेम के धागे से नहीं बंध पायें हैं। यही कारण है कि कृष्ण से बिछड़े हुए गोपियों की विरह वेदना को वे समझ नही पा रहे हैं। गोपियाँ कहना चाह रहीं हैं कि श्रीकृष्ण का रूप ही ऐसा है कि उनके साथ रहकर कठोर से कठोर ह्रदय के व्यक्ति के मन में भी उनके प्रति प्रेम उत्पन्न हो जाये।

प्रश्न : 2. उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किस से की गई है?

उत्तर :- उद्धव के व्यवहार की तुलना दो वस्तुओं से की गई है-

1. कमल के पत्ते से जो पानी में रहकर भी पानी के प्रभाव से मुक्त रहता है।
2. तेल से भरी मटकी से जो पानी के बीच रहने पर भी पानी के प्रभाव से मुक्त रहती है।

प्रश्न : 3. गोपियों ने किन-किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं?

उत्तर :- गोपियों ने निम्नलिखित उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं -

1. गोपियाँ उद्धव को उलाहना देते हुए कहती हैं कि जिस प्रकार पानी के

© JCERT not to be republished

अंदर रहने वाला कमल का पत्ता पानी के प्रभाव से मुक्त रहता है उसी प्रकार तुम श्रीकृष्ण के पास रहते हुए भी उनके प्रेम से वंचित हो।

2. वे कहती है कि हे उद्धव! हम श्रीकृष्ण से प्रेम की संदेश की अपेक्षा करते थे लेकिन उनके द्वारा प्रेम के बदले योग का संदेश भेजकर प्रेम की मर्यादा को तोड़ दी गई।

प्रश्न : 4. उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरहाग्नि में घी का काम कैसे किया?

उत्तर :- श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने पर गोपियाँ पहले से विरहाग्नि में जल रही थीं। उनकी विरह वेदना केवल कृष्ण को अपने समक्ष देखकर ही शांत हो सकती थी। वे श्रीकृष्ण के प्रेम-संदेश और उनके आने की प्रतीक्षा कर रही थीं। ऐसे में श्रीकृष्ण ने उन्हें योग साधना का संदेश भेज दिया, जिससे उनके मन की विरह-वेदना कम होने के बजाय और भी बढ़ गई। इस तरह उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेशों ने गोपियों की विरहाग्नि में घी का काम किया।

प्रश्न : 5. 'मरजादा न लही' के माध्यम से कौन-सी मर्यादा न रहने की बात की जा रही है?

उत्तर :- 'मरजादा न लही' के माध्यम से कृष्ण द्वारा प्रेम की मर्यादा न रखने की बात की जा रही है। कृष्ण ने गोपियों से प्रेम का सन्देश भेजने के बजाय उनके लिए नीरस योग-संदेश भेज दिया।गोपियाँ कृष्ण से मिलना चाहती थी लेकिन कृष्ण स्वयं आने के बदले उद्धव के द्वारा संदेश भेजते है। जिससे उनकी प्रेम की मर्यादा टूट जाती हैं।

प्रश्न : 6. कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है?

उत्तर :- गोपियों ने कृष्ण के प्रति अपनी अनन्य प्रेम को निम्नलिखित रूपों में अभिव्यक्त करती हैं-

1. गोपियों के अनुसार उनकी मन की स्थिति गुड़ से चिपटी चींटियों जैसी हैं जो किसी भी दशा में कृष्ण प्रेम से दूर नहीं रह सकती हैं।
2. वे श्रीकृष्ण को हारिल की लकड़ी के समान मानती हैं जो प्रेम के कारण अपने पैरों में एक लकड़ी चिपकाए रखती है। उसी प्रकार वे श्रीकृष्ण के प्रति मन-कर्म और वचन से समर्पित हैं।
3. वे सोते-जागते, दिन-रात कृष्ण का जाप करती हैं। उन्हें कृष्ण प्रेम के आगे योग संदेश कड़वी ककड़ी जैसी लगती है।।

प्रश्न : 7. गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने की बात कही है?

उत्तर :- गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा ऐसे लोगों को देने की बात कही है जिनके मन चंचल है, स्थिर नहीं हैं। जिनके हृदय में कृष्ण के प्रति सच्चा प्रेम नहीं है। जिनके मन में भटकाव है, दुविधा है, भ्रम है।वे कहती है कि हमारा मन पहले से ही स्थिर और कृष्ण के प्रेम मे एकाग्र है हमें योग की आवश्यकता नहीं है।

© JCERT not to be republished

प्रश्न : 8. प्रस्तुत पदों के आधार पर गोपियों का योग-साधना के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट करें।

उत्तर :- सूरदास द्वारा रचित प्रस्तुत पदों में गोपियों की कृष्ण के प्रति एकनिष्ठ प्रेम, भक्ति, और स्नेहमयता प्रकट हुई है। गोपियाँ अपने मन, क्रम, वचन से कृष्ण को अपनाए हुए है। जिस पर किसी अन्य का कोई प्रभाव नही रह जाता है। गोपियों के अनुसार योग साधना की आवश्यकता तो उनको होती है जो जीवन से प्रेम करते हैं हम तो श्रीकृष्ण से प्रेम करते हैं। इस प्रकार गोपियों का योग के प्रति विरक्ति की भावना है।

प्रश्न : 9. गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिए?

उत्तर :- गोपियों के अनुसार नीति के मार्ग पर चलते हुए प्रजा के हित की चिन्ता करना, उनके कष्टों का निवारण करना तथा उनके सुखों के लिए कार्य करना ही राजा का धर्म होना चाहिए।

प्रश्न : 10. गोपियों को कृष्ण में ऐसे कौन-से परिवर्तन दिखाई दिए जिनके कारण वे अपना मन वापस पा लेने की बात कहती हैं?

उत्तर :- गोपियों को कृष्ण में ऐसे अनेक परिवर्तन दिखाई दिए जिनके कारण वे अपना मन श्रीकृष्ण से वापस पा लेने की बात कहती है —

1. श्रीकृष्ण ने अब राजनीति पढ़ लिया है जिससे उनके व्यवहार पर बहुत बदलाव आ गया है।
2. श्रीकृष्ण को अब प्रेम की मर्यादा पालन का ध्यान नहीं रहा।
3. श्रीकृष्ण को अब राजधर्म याद नही रहा।
4. दूसरों को नीति का मार्ग दिखाने वाले कृष्ण अब स्वयं अनीति पर उतर आए हैं।

प्रश्न : 11. गोपियों ने अपने वाक्चातुर्य के आधार पर ज्ञानी उद्धव को परास्त कर दिया, उनके वाक्चातुर्य की विशेषताएँ लिखिए?

उत्तर :- श्री कृष्ण गोपियों को गोकुल में छोड़कर मथुरा चले जाने पर गोपियों की प्रेम विरह वेदना बढ़ जाती है। श्री कृष्ण गोपियों की प्रेम विरह वेदना को शांत करने के लिए उद्धव के माध्यम से योग संदेश भिजवाते है। लेकिन गोपियाँ बड़ी चतुराई तथा वाकपटुता से उद्धव को निरुत्तर कर देती है। गोपियों की वाक्चातुर्य की निम्नलिखित विशेषताए हैं -

1. गोपियों द्वारा श्री कृष्ण के लौकिक प्रेम भावना का प्रदर्शन।
2. विभिन्न लौकिक दृष्टांतों द्वारा ज्ञान का प्रमाण प्रस्तुत करना।
3. योग को उनके लिए उपयोगी बताना जिनका मन चंचल है। जिनका मन कृष्ण के प्रेम में स्थिर हो चुका हो उनके लिए योग निरर्थक हैं।

प्रश्न : 12. संकलित पदों को ध्यान में रखते हुए सूर के भ्रमरगीत की मुख्य विशेषताएँ बताइए ?

उत्तर :- सूरदास द्वारा रचित 'भ्रमरगीत' से संकलित प्रस्तुत चार पदों के आधार पर भ्रमरगीत की कुछ निम्नलिखित विशेषताए हैं-

© JCERT not to be republished

1. श्री कृष्ण के प्रेम की उदात्तता का चित्रण जिससे अछूता रहना कठिन है।
2. सूरदास ने उद्धव की तुलना भौरे से किया है, जिसके गीत गोपियों के लिए अप्रासांगिक है।
3. भक्ति को सांसारिक बाधाओं से मुक्ति का मार्ग बताया है।
4. निर्गुण पर सगुण का विजय बताया है
5. श्रीकृष्ण के माध्यम से जनता का शोषण करने वाले शासकों पर कटाक्ष किया है।
6. कृष्ण के प्रति गोपियों की प्रेम की गहराई को अभिव्यक्त किया गया है।
7. गोपियों द्वारा यहाँ उद्धव को राजधर्म याद दिलाया जाना सूरदास की लोकधर्मिता को दर्शाता है।
8. भ्रमरगीत एक भाव-प्रधान गीतिकाव्य है।

रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न : 13. गोपियों ने उद्धव के सामने तरह-तरह के तर्क दिए हैं, आप अपनी कल्पना से और तर्क दीजिए।

उत्तर :- मेरी कल्पना के अनुसार गोपियों द्वारा उद्धव को यह तर्क दिया जाना चाहिए कि- उद्धव! यदि यह योग-संदेश इतना ही प्रभावशाली है तो कृष्ण से कहना कि कुब्जा को यह योग-संदेश दें। कृष्ण को यह समझना चाहिए कि योग-मार्ग कठिन है। इसमें कठिन साधना करनी पड़ती है। हम गोपियाँ कोमलांगी और मधुर मन वाली हैं। हमसे यह कठोर साधना कैसे हो पाएगा। हमारे लिए यह असंभव है।

प्रश्न : 14. उद्धव ज्ञानी थे, नीति की बातें जानते थे; गोपियों के पास ऐसी कौन-सी शक्ति थी जो उनके वाक्चातुर्य में मुखरित हो उठी?

उत्तर :- उद्धव ज्ञानी थे, नीति की बातें जानते थे परंतु उन्हें सांसारिकता तथा व्यावहारिकता का अनुभव नहीं था। गोपियाँ यह भलि-भाँति जानती थी कि उद्धव को श्रीकृष्ण से प्रेम नहीं हो सका इसलिए उन्होंने कहा था 'प्रीति नदी में पाउँ न बोरयो'। उद्धव के पास इसका कोई जवाब न था। इससे गोपियों का वाक्चातुर्य मुखरित हो उठी। गोपियाँ कृष्ण के प्रति असीम, अथाह लगाव रखती थी। जबकि उद्धव को प्रेम जैसी भावना से कोई मतलब न था। उद्धव को इस स्थिति में चुप देखकर उनकी वाक्चातुर्य और भी मुखरित हो उठी।

प्रश्न : 15. गोपियों ने यह क्यों कहा कि हरि अब राजनीति पढ़ आए हैं? क्या आपको गोपियों के इस कथन का विस्तार समकालीन राजनीति में नज़र आता है, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- जब गोपियों ने देखा कि जिस कृष्ण की वे बहुत समय से प्रतीक्षा कर रही थीं, वे आने की आस देकर भी नहीं आए। उसकी जगह कृष्ण से दूर करने वाला योग-संदेश उद्धव के द्वारा भेजा गया तो उन्हें इसमें कृष्ण की एक चाल नज़र आई। वे इसे अपने साथ छल समझने लगीं। इसीलिए उन्होंने आरोप लगाया कि "हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।"आज की राजनीति तो सिर से पैर तक छलावा से भरी हुई है। किसी को किसी भी राजनेता के

© JCERT not to be republished

वादों पर विश्वास नहीं रह गया है। आज़ादी के बाद से गरीबी हटाओ का नारा लग रहा है किंतु तब से लेकर आज तक गरीब हटते गए लेकिन गरिबी नही हटी,बल्की वृद्धि ही हुई है। इसलिए गोपियों का यह कथन समकालीन राजनीति पर खरा उतरता है।

पाठेतर सक्रियता

प्रश्न : 16. प्रस्तुत पदों की सबसे बड़ी विशेषता है गोपियों की 'वाग्विदग्धता'। आपने ऐसे और चरित्रों के बारे में पढ़ा या सुना होगा जिन्होनें अपने वाक्चातुर्य के आधार पर अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई; जैसे-बीरबल, तेनालीराम, गोपालभाँड, मुल्ला नसीरुद्दीन आदि। अपने किसी मनपसंद चरित्र के कुछ किस्से संकलित कर एक अलबम तैयार करें।

उत्तर :- उक्त प्रश्न का उत्तर विद्यार्थी स्वयं करे।

प्रश्न : 17. सूर रचित अपने प्रिय पदों को लय व ताल के साथ गाएँ।

उत्तर :- उक्त प्रश्न का उत्तर विद्यार्थी स्वयं करे।

अतिरिक्त प्रश्नोत्तर

प्रश्न: 1.गोपियों ने कृष्ण को हारिल की लकड़ी के समान क्यों बताया है?

उत्तर :- गोपियों ने कृष्ण को हारिल की लकड़ी के समान इसलिए बताया है क्योंकि जिस प्रकार हारिल पक्षी अपने पंजे में दबी लकड़ी को आधार मानकर उड़ता है उसी प्रकार गोपियों ने अपने जीवन का आधार कृष्ण को मान रखा है।

प्रश्न: 2.'कमल के पत्ते' और 'तेल लगी गागर' की क्या विशेषता होती है?

उत्तर :- .'कमल के पत्ते' और 'तेल लगी गागर' की यह विशेषता होती है कि कमल का पत्ता इतना चिकना होता है कि पानी की बूंद उस पर नहीं ठहर सकती है। इसी प्रकार तेल भरी गगरी को जब पानी में डुबोया जाता है तो उसपर पानी का कोई असर नहीं होता है।

प्रश्न: 3.गोपियों ने स्वयं को अबला और भोली क्यों कहा है?

उत्तर :- गोपियों ने स्वयं को अबला और भोली कहा है क्योंकि गोपियाँ कृष्ण से दूर रहकर भी उनके प्यार में अनुरक्त हैं। वे स्वयं को कृष्ण के प्रेमबंधन में बँधी पाती हैं। वे चाहकर भी कृष्ण के प्रेम को भुला नही पाती। चाहे कृष्ण जितना भी चाल चल लें।

प्रश्न: 4.गोपियाँ किस आधार पर विरह व्यथा सह रही थीं ?

उत्तर :- श्रीकृष्ण मथुरा जाते समय गोपियों से कहा था कि वे जल्द से जल्द ब्रज वापस आ जाएँगे। उसी आने की अवधि को आधार बनाकर गोपियाँ तन और मन की विरह व्यथा सह रही थीं।

© JCERT not to be republished

प्रश्न: 5. गोपियों की कृष्ण की आने की आशा निराशा में कैसे बदल गई?

उत्तर :- गोपियाँ अपनी विरह-वेदना को झेलने को विवश थीं, क्योंकि श्रीकृष्ण से उनकी मिलने की आशा थी पर जब कृष्ण ने ही उद्धव के हाथों योग-संदेश भिजवाया तो उनकी यह आशा निराशा में बदल गई।

प्रश्न 6. गोपियों ने कृष्ण को राजधर्म की बात क्यों याद दिलाई?

उत्तर :- गोपियों ने कृष्ण को राजधर्म की बात इसलिए याद दिलाई क्योंकि श्रीकृष्ण प्रेम-भक्ति में ओतप्रोत गोपियों के लिए योग संदेश भेजकर उनके साथ अनीति भरा आचरण कर रहे थे। उनका मानना था कि राजा को अपनी प्रजा की भलाई की बात सदैव स्मरण रखना चाहिए। जबकि कृष्ण ऐसा नहीं कर रहे थे।

प्रश्न 7. सूरदास का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?

उत्तर :- सूरदास का जन्म सन् 1478 मेंआगरा-मथुरा के निकट रुनकता नामक गाँव(कुछ विद्वानो के अनुसार दिल्ली के पास सीही) नामक स्थान में हुआ था।

प्रश्न 8. सूरदास के गुरू का नाम क्या था ?

उत्तर :- सूरदास के गुरू का नाम महाप्रभु वल्लभाचार्य था।

प्रश्न 9. वात्सल्य और श्रृंगार के श्रेष्ठ कवि किसे माना जाता है?

उत्तर :- वात्सल्य और श्रृंगार के श्रेष्ठ कवि सूरदास को माना जाता है।

प्रश्न 10. सूरदास द्वारा रचित मुख्य तीन ग्रन्थों के नाम लिखिए।

उत्तर :- सूरसागर, साहित्य लहरी और सूरसारावली।

प्रश्न 11. सूरदास की मृत्यु कब हुई ?

उत्तर :- सन् 1583 में पारसौली में सूरदास की मृत्यु हुई थी।

© JCERT not to be republished

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से दीजिए-

प्रश्न 1-उद्धव कृष्ण का कौन-सा संदेश लेकर आए थे?

(a) प्रेम-संदेश

(b) अनुराग-संदेश

(c) योग-संदेश

(d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(c) योग-संदेश

प्रश्न 3-उद्धव के व्यवहार की तुलना किसके पत्ते से की गई है?

(a) पीपल के (b) कमल के

(c) केला के (d) नीम के

उत्तर-(b) कमल के

प्रश्न 4-गोपियों को अकेला छोड़कर कृष्ण कहाँ चले गए थे?

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

(a) ब्रज (b) द्वारका

(c) मथुरा (d) वृन्दावन

उत्तर-(c) मथुरा

प्रश्न 5 गोपियों को कृष्ण का व्यवहार कैसा प्रतीत होता है?

(a) उदार (b) छलपूर्ण

(c) निष्ठुर (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (b) छलपूर्ण

प्रश्न 6 गोपियाँ स्वयं को क्या समझती हैं?

(a) डरपोक (b) कमजोर

(c) अबला (d) साह

उत्तर-(c) अबला

प्रश्न 7 गोपियाँ किसके प्रेम में आसक्त हो गई हैं?

(a) उद्धव-प्रेम (b) कृष्ण-प्रेम

(c) संगीत-प्रेम (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(b) कृष्ण-प्रेम

प्रश्न 8 इनमें से किस पक्षी की तुलना गोपियों से की गई है?

(a) कोयल (b) मोर

(c) हारिल (d) चकोर

उत्तर-(c) हारिल

प्रश्न 9-गोपियों के अनुसार किसने प्रेम की मर्यादा का उल्लंघन किया है?

(a) गोपियों ने (b) उद्धव ने

(c) राजा ने (d) कृष्ण ने

उत्तर-(d) कृष्ण ने

प्रश्न 10. "सूरदास अवला हम भोरी गुर चॉटी ज्यो पागी" इस पंक्ति में निहित अलंकार बताइए?

(a) दृष्टांत (b) रुपक

(c) उपमा (d) शलेष

उत्तर-(a) दृष्टांत

प्रश्न 11. 'विथा' शब्द का तत्सम रूप लिखिए?

(a) व्यर्थ (b) व्यथा

(c) बिना (d) मंथन

उत्तर- (b) व्यथा

प्रश्न 12. 'डोलत धाए का' क्या तात्पर्य है?

(a) पा लेंगे

(b) रक्षा के लिए पुकारना

(c) घूमते फिरते थे

(d) रखती रहती हैं

उत्तर-(c) घूमते फिरते थे

प्रश्न 13. गोपियों ने क्या चीज सुनी और देखी नहीं थी?

(a) प्रेम संदेश (b) व्याधि

(c) योग — संदेश (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(c) योग — संदेश

प्रश्न 14. जो ना जाही सताए, पंक्ति को उचित शब्द से पूर्ण कीजिए?

(a) गोपियाँ (b) राजा

(c) प्रजा (d) उद्धव

उत्तर-(c) प्रजा

© JCERT not to be republished

प्रश्न 15. गोपियाँ किससे गुहार लगाना चाहती थी?

(a) राम से (b) कृष्ण जी से

(c) ऊधौ से (d) प्रभु से

उत्तर-(b) कृष्ण जी से

प्रश्न 16. हारिल पक्षी से किसकी तुलना की गई है?

(a) गोपियों की (b) उधो की

(c) कृष्ण की (d) ब्रज वासियों की

उत्तर-(a) गोपियों की

प्रश्न 17. उद्धव की योग संबंधी बातें गोपियों को कैसी लगती है?

(a) खरबूजे के समान मधुर

(b) शहद के सामान मीठी

(c) कड़वी ककड़ी के सामान

(d) हारिल पक्षी के समान चंचल

उत्तर-(c) कड़वी ककड़ी के सामान

प्रश्न 18. गोपियों ने कृष्ण को किस प्रकार धारण किया था?

(a) मन से (b) कर्म से

(c) वचन से (d) उपरोक्त सभी

उत्तर-(d) उपरोक्त सभी

प्रश्न 19. 'जकरी' शब्द का क्या अर्थ है?

(a) व्यर्थ होना (b) रटना

(c) दुखी होना (d) जर्जर होना

उत्तर-(b) रटना

प्रश्न 20. योगरूपी व्याधि गोपियों ने किसे देने की सलाह दी है?

(a) जो बीमार हो

(b) जो कृष्ण को ही भगवान माने

(c) जिसका मन चंचल है

(d) जो ईश्वर भक्त हो

उत्तर-(c) जिसका मन चंचल है

प्रश्न 21. 'मधुकर' शब्द का प्रयोग किसके लिए हुआ है?

(a) गोपियों के लिए (b) भोरे के लिए

(c) कृष्ण के लिए (d) उद्धव के लिए

उत्तर-(d) उद्धव के लिए

प्रश्न 22. कृष्ण व्रज से जाते समय अपने साथ गोपियों का क्या चुरा ले गए थे?

(a) दूध (b) दही

(c) मक्खन (d) मन

उत्तर-(d) मन

प्रश्न 23. गोपियों के अनुसार सच्चा राज -धर्म क्या है?

(a) प्रजा का पालन

(b) प्रजा को बिल्कुल ना सताना

(c) प्रजा की सभी सुखों का ध्यान रखना

(d) उपरोक्त सभी

उत्तर-(d) उपरोक्त सभी

प्रश्न 24. सूरदास का जन्म कब हुआ ?

(a) सन 1488 (b) सन 1468

(c) सन 1478 (d) सन 1448

उत्तर-(c) सन 1478

© JCERT not to be republished

प्रश्न 25. सूरदास की मृत्यु कब हुई थी?

(a) सन 1578 (b) सन 1568

(c) सन 1583 (d) सन 1520

उत्तर-(c) सन 1583

प्रश्न 26.सूरसागर में लगभग कितने पद हैं?

(a) लगभग सवा सौ

(b) लगभग 500

(c) लगभग 700

(d) लगभग 1100

उत्तर-(a) लगभग सवा सौ

प्रश्न 27. निम्नलिखित में से कौन सी रचना सूरदास जी की नहीं है?

(a) साहित्य अमृत (b) सूरसागर

(c) सूरसारावली (d) साहित्य लहरी

उत्तर-(a) साहित्य अमृत

प्रश्न 28. सूरदास ने अपने साहित्य में किस रस को प्रमुखता दी है?

(a) वात्सल्य रस (b) वीर रस

(c) भयानक रस (d) हास्य रस

उत्तर-(a) वात्सल्य रस

प्रश्न 29. सूरदास के साहित्य में किस भाषा को प्रमुखता दी गई है?

(a) राजस्थानी भाषा (b) ब्रजभाषा

(c) बुंदेली भाषा (d) अवधी भाषा

उत्तर-(b) ब्रजभाषा

प्रश्न 30. गोपियों ने उद्धव को बड़भागी क्यों कहा है?

(a) श्री कृष्ण के सखा थे इसलिए उनको बड़भागी कहा है

(b) क्योंकि उद्धव बहुत ही भाग्यवान है

(c) ऐसा कहकर गोपियों ने उद्धव पर व्यंग किया है

(d) उद्धव बहुत ही ज्ञानी थे और गोपियां उनके ज्ञान का लोहा मानती थी

उत्तर-(c) ऐसा कहकर गोपियों ने उद्धव पर व्यंग किया है

प्रश्न 31. गोपियों ने उद्धव के अनासक्त रहने की तुलना किससे की है?

(a) कमल के पत्ते से

(b) तेल की मटकी से

(c) कमल के पत्ते और तेल की मटकी दोनों से

(d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(c) कमल के पत्ते और तेल की मटकी दोनों से

प्रश्न 32. प्रीति नदी में कौन सा अलंकार है?

(a) यमक (b) रूपक

(c) अनुप्रास (d) उपमा

उत्तर-(b) रूपक

प्रश्न 33. गुर चाँटी ज्यौ पागी में गुर से किसकी तुलना हुई है और चाँटी से किसकी?

(a) गुड से उद्धव की तुलना हुई है, और चींटी से गोपियों की

(b) गुड से कृष्ण की तुलना हुई है, और चींटी से गोपियों की

© JCERT not to be republished

(c) गुड़ श्री कृष्ण की तुलना हुई है, चीटियों से राधा की

(d) गुड़ की ब्रज वासियों से तुलना हुई है, और चीटियों से राधा की

उत्तर-(b) गुड से कृष्ण की तुलना हुई है, और चींटी से गोपियों की

प्रश्न 34. गोपियों ने स्वयं को भोरी क्यों कहा है?

(a) वे मूर्ख थी

(b) मैं किसी का कहना नहीं मानती थी

(c) भूतों की बातों में आ गई थी

(d) वे छल कपट और चतुराई से दूर थी

उत्तर-(d) वे छल कपट और चतुराई से दूर थी

प्रश्न 35."समुझी बात कहत .... के समाचार सब पाए" पंक्ति को पूरा कीजिए?

(a) कृष्ण (b) उद्धव

(c) मधुकर (d) दिनकर

उत्तर-(c) मधुकर

प्रश्न 36. अपरस शब्द का यहां क्या अर्थ है?

(a) सूखा (b) अनासक्त

(c) दुर्भाग्य शाली (d) निर्विकार

उत्तर-(b) अनासक्त

प्रश्न 37. कमल की पत्ती की कौन सी विशेषता कविता में बताई गई है?

(a) कमल का पत्ता सुंदर होता है

(b) कमल का पत्ता पानी में डूबा रहता है उस पर कोई दाग नहीं लगता

(c) पहला और दूसरा उत्तर सही है

(d) इनमें से कोई भी सही नहीं है

उत्तर-(b) कमल का पत्ता पानी में डूबा रहता है उस पर कोई दाग नहीं लगता

प्रश्न 38.'अपरस रहत — तगा ते' पंक्ति को उचित शब्द से पूर्ण कीजिए?

(a) सूखा (b) देह

(c) सनेह (d) निर्विकार

उत्तर-(c) सनेह

प्रश्न 39.अवधि अधार आवन' की पंक्ति को उचित शब्द से पूर्ण कीजिए?

(a) प्यासा (b) धीर

(c) आस (d) विधा

उत्तर-(c) आस

प्रश्न 40.अपरस रहत सनेह तगा ते कवि के अनुसार या किसी स्थिति को इंगित करता है?

(a) सौभाग्य (b) वैराग्य

(c) दुर्भाग्य (d) अति प्रेम

उत्तर-(c)

© JCERT not to be republished